सोशल मीडिया का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. शिप्रा गुप्ता,
रीडर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

गीता स्वामी
बी.एड. एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

समाचार पत्रों द्वारा सूचनाओं के प्रचार–प्रसार में काफी समय लगता था। इलेक्ट्रानिक मीडिया के गर्भ से जन्मे पहले ई–मेल, या पहले ई–मेल से जन्मे इलेक्ट्रानिक मीडिया को साक्षात् घटित होते हुए देखने वाले समय की आंतरिक परते जिसे भी मातृ रूप में स्वीकार करे। उपयोगकर्ताओं के लिए इनका जन्म ही नए युग का संकेत था। ईमेल ने पत्र व्यवहार के अपने आवरण को बहुत ही कम समय में रूपांतरित कर सूचना एवं संदेशों की प्राप्ति सूची घास में अग्नि के प्रवेश की तरह बहुत जल्दी मिलने लगी। कमर्शियल ईमेल के आरम्भ होने पर सूचनाए एवं संदेश ऑनलाईन पढ़े और लिखे जाने लगे तो प्रिंट मीडिया के प्रसार को सीमित करने की और अग्रसर हो चले। संचार क्रांति में रेडियो का आविष्कार किया गया। रेडियों, संचार यंत्र के माध्यम से मानवों के बीच भाषाओं का ज्ञान, सूचनाएं, सुझाव, संकेत, पूर्वानुमान आदि अतिआवश्यक तत्वों का उदय सार्थक किया जिसके उपयोग से संचार का प्रत्येक कोना भी अब मानव सूचना के दायरे में आ गया और देखते ही देखते विश्व की प्रत्यक्ष संचार व्यवस्था का उदय हुआ।

तकनीकी शब्द: *सोशल मीडिया, उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, नैतिक मूल्य*

---

१. प्रस्तावना

सोशल मीडिया वर्तमान मानव सभ्यता का प्रमुख संचार एवं सुलभ संवाद का माध्यम है। जिसकी भूमिका का परिदृश्य सोशल मीडिया साइट्स के उपयोग कर्ताओं की संख्या से लगाया जा सकता है जो लगभग 6 अरब है। वर्तमान में सोशल मीडिया का स्वरूप इस प्रकार समझ सकते है कि सोशल मीडिया दुनिया में एक अरब से ज्यादा लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह ऐ ऐसा ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ताओं को ए सार्वजनिक प्रोफाइल एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने में अनुमति प्रदान करता है। सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्यधारा से जोड़ने और खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसे खुद को अधिक प्रसिद्ध दिखाने का शैक सदैव रहता है। अधिक लोकप्रिय दिखाना यानी अधिक दोस्त होना, सोशल नेटवर्किंग साइट मनुष्य के इसी मनोविज्ञान को खूब भूना रही है। व्यक्ति अपने किसी विचार पर तत्काल बहुत से लोगों की प्रतिक्रिया जानना चाहता है। मीडिया में ऐसे टू–वे कम्युनिकेशन की दी अपेक्षा की जानी है।

ऑस्ट्रेलिया की कम्पनी 'यू सोशल' तथा कई अन्य कम्पनियां तो सोशल साइट्स पर पैसे देकर दोस्त उपलब्ध कराने का कार्य भी करने लगी है। इनका दावा है कि 125 पाउंड देने पर 1000 दोस्त उपलब्ध कराये जायेंगे पर अक्सर ऐसे दोस्त बनाने वाली कम्पनियां फर्जी ही होती है। आने वाले समय में जल्द ही दुनिया की 2–3 गुना अधिक आबादी इन्टरनेट पर होगी।

आंकड़ों के अनुसार वर्तमान में भारत में तकरीबन 518 मिलियन सोशल मीडिया यूजर और अनुमान के मुताबिक वर्ष 2040 तक यह संख्या लगभग 1.5 बिलियन तक पहुंच जायेगी। वर्ष 2019 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय उपयोगकर्ता औसतन 2–4 घण्टे सोशल मीडिया पर बिताने वाले लोग मिले।

टेक्नोलॉजी का दिन–प्रतिदिन विकास होता जा रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों का जीवन आसान हो गया है।

२. समस्या का औचित्य

हर चीज मोबाइल में रखने आदत हमारी डेकोरेटिव मेमोरी यानी चीजों को याद रखने की क्षमता को नुकसान पहुँचा रही है। सूचना को विस्तार से समझने का चलन भी घट रहा है। लोगों में मल्टी टास्किंग प्रवृति भी बढ़ रही है। जिससे लोग हर संभव दो से अधिक काम करते है जो सेहत के लिए अच्छा नहीं है। इन सबके अतिरिक्त सोशल मीडिया ने हमारी पहचान की चोरी, जनकारी की चोरी, साइबर धोखाधड़ी, अकाउंट हैकिंग और वायरस के खतरों से प्रभावित होने की आशंकाओं को बढ़ावा दिया है।

यदि हम अपना पता, फोन नम्बर, कार्यस्थल या अपने परिवार कि जानकारी किसी भी सोशल साइट पर अपडेट करते है तो हम अपनी व्यक्तिगत गोपनीयता खो रहे है। वहीं आज साशेल मीडिया के आधार पर आज का किशोर सोशल मीडिया के प्रभाव में ना जाने क्या क्या कर रहे है इसलिए मेरे मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या सोशल मीडिया किशोरों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित करता है?

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम ये देख सकते है कि सोशल मीडिया का प्रभाव हमारे समाज पर कितना हावी हो रहा है। अतः यही पृष्ठभूमि हमारे शोध की आवश्यकता है और हमारे शोध की समस्या भी यही है। सोशल मीडिया को उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक, नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। चुनावी जंग एक दूसरे के लिए नफरत फैलने जैसे कार्य भी आसानी से हो रहे है।

३. सम्बन्धित साहित्य

पिन्टू रंजन प्रसाद (2022)–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर सोशल मीडिया का प्रभाव।इनका उद्देश्य था कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना और सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना। इसमें पाया गया कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सार्थक प्रभाव पाया गया। सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के समायोजन पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

प्रांजल शर्मा, मनीषा जैन (2022) सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन करना।इनका अध्ययन उद्देश्य है कि सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।इसमें पाया गया कि सोशल मीडिया के प्रयोग से विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि की सार्थक वृद्धि होगी।

डॉ. अमिता जैन (2019)–महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना। इनका उद्देश्य यह था कि महाविद्यालय स्तर पर कला वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।इसमें पाया गया कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। शिक्षा तकनीकी ने भारत के अधिगम व सीखने के स्तर को विकसित किया है। सोशल मीडिया के द्वारा सामाजिक संबंध मजबूत होते है।

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह (2019)–इनका अध्ययन उद्देश्य था कि युवाओं में सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने की क्या आदते है। युवा सोशल मीडिया का किस प्रकार से उपयोग कर रहे है।इसमें पाया गया कि भारत में युवाओं के बीच सोशल मीडिया कि लोकप्रियता काफी अधिक है। राजनीति शिक्षा और मनोरंजन के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल युवाओं में अधिक किया जाता है। अधिकतर युवा एक निश्चित समय पर सोशल मीडिया के बजाय बार–बार खोलते एवं बंद करते है।

डॉ. मुकुल श्रीवास्तव, सुरेदू कुमार (2017)– सोशल मीडिया एवं युवा विकास। इनका उद्देश्य था कि सोशल मीडिया के जरिये हो रहे सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना, सोशल नेटवर्किंग साइट के माध्यम से युवा विकास संबंधित सूचनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना। इसमें पाया गया कि सोशल नेटवर्किंग साइट का दायित्व बढ़ता जा रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं के विकास से संबंधित स्वास्थ्य शिक्षा केरियर योजना जानकारी के लिए बेहतर सुविधा प्रदान करती है।

४. शोधान्तर

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित देश व विदेश में किए गए विभिन्न निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है – पिन्टू रंजन प्रसाद (2022), प्रांजल शर्मा, मनीषा जैन, डॉ. अमिता जैन (2019), डॉ. अरविन्द कुमार सिंह (2019) एवं गिरधर विनोद कुमार (2017) आदि ने सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के जरिए हो रहीं सामाजिक परिवर्तन तथा सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। लेकिन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन नहीं किया गया। इसलिए के नैतिक मूल्यों को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मूल्यों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाए। इसलिए इस समस्या का चयन किया है।

५. समस्या कथन

सोशल मीडिया का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

६. शोध के उद्देश्य

१. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों व छात्राओं का सोशल मीडिया के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
२. उच्च माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं का सोशल मीडिया के सदंर्भ में सोशल मीडिया पर व्यतीत किये गये समय का अध्ययन करना।

३. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं का सोशल मीडिया के सन्दर्भ में सोशल मीडिया पर व्यतीत किये गये समय का अध्ययन करना।

७. शोध की परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों व छात्राओं का सोशल मीडिया के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

८. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली को तीन आयामें में क्रमशः बांटा गया, जिनमें प्रथम सामाजिक मूल्य के 10 प्रश्न, नैतिक मूल्य के 10 प्रश्न, व्यतीत किये समय के 10 प्रश्नों को शामिल कर कुल 30 प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार की गई। प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए एक प्रत्येक प्रश्न के अंक निर्धारण 1, 2, 3, 4 के रूप में किया गया।

क्र.स.	मूल्य	आयाम	प्रश्न संख्या	कुल प्रश्न
1.	नैतिक	दया	11-12	2
2.	नैतिक	प्रेम	13-14	2
3.	नैतिक	सहानुभूति	15-16	2
4.	नैतिक	ईमानदारी	17-18	2
5.	नैतिक	सत्य	19-20	2
कुल				10

९. जनसंख्या

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान हेतु उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी जनसंख्या के रूप में रहेगा।

१०. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान हेतु 300 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि के तहत लॉटरी के द्वारा प्रदत्तों का चयन किया गया है।

९. शोध विधि

शोध प्रविधि एक विशेष तरीका है, जिसका उपयोग विभिन्न विषयों पर शोध करने के लिए किया जाता है। इसमें विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके संग्रहित डेटा विश्लेषण किया जाता है, ताकि नये विचारों और अनुमानों को खोजा जा सकें। सर्वेक्षण विधि में प्रश्नावली द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया।

११. शोध के चर

1. स्वतंत्र चर–सोशल मीडिया
2. आश्रित चर–नैतिक मूल्य

परिकल्पना : उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र.स.	समूह	विद्यार्थियों की सं.	मध्यमान	SD	प्रसरण गुणांक	टी–मूल्य	परिणाम
1.	सरकारी विद्यालय के छात्र	130	21.84	2.52	11.53	1.13	स्वीकृत
2.	सरकारी विद्यालय की छात्राएं	130	22.52	3.27	14.5		

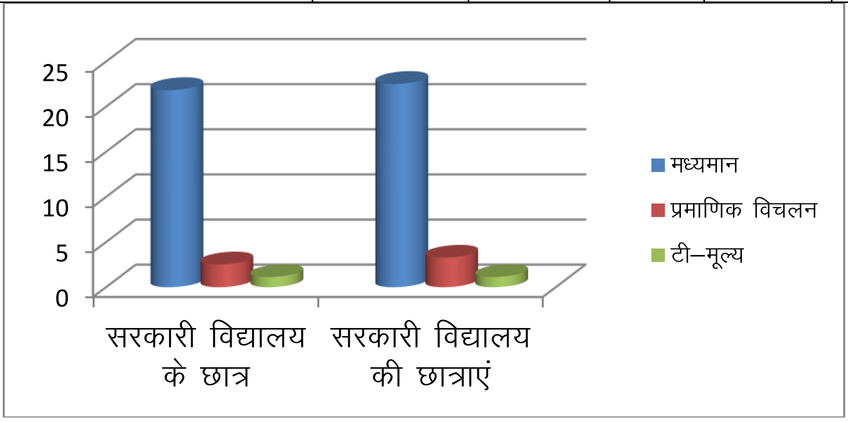

१२. व्याख्या एवं विश्लेषण

उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों के अध्ययन से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित करती है। df = 48 का टी तालिका मूल्य 1.13 प्राप्त हुआ है। df = 48 व सार्थकता स्तर .05 पर सारणी से प्राप्त टी मूल्य मान 2.011 है। गणना से प्राप्त मान 1.13, सारणी से प्राप्त मान 2.011 से कम है। अतः बनायी गई परिकल्पना उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। स्वीकृत होती है।

१३. परिणाम

छात्र व छात्राएँ सोशल मीडिया से प्रभावित हो रही है। जो विद्यार्थी सोशल मीडिया पर 5–6 घण्टे यह देखा गया है कि समय व्यतित करते है। वो आभासी दुनिया मे रहते है तथा जो विद्यार्थी सोशल मीडिया सांइट्स 2–3 घंटे समय व्यतीत करते है। उसका चिडचिडापन स्वभात देखा गया है विद्यार्थियों में सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों के प्रति जागरूकता कम पायी गयी। उनके एक दूसरे के प्रति सहानुभूति, दया प्रेम, ईमानदारी व सत्य की भावना कम पायी गयी अतः विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के प्रति जागरूक करना आवश्यक है ।

१४. निष्कर्ष

विद्यार्थियों को दया, प्रेम, सहानुभूति, ईमानदारी, नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक बनाना चाहिए शिक्षको द्वारा सोशल मीडिया के प्रभाव से सम्बन्धित कार्यशाला आयोजित करवानी चाहिए जिससे सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को जानकर इसके सही उपयोग समझाए जा सकते है। अभिभावकों को अपने व्यावसायिक व व्यक्तिगत जीवन से समय निकालकर बच्चों को उचित समय देने चाहिए और सोशल मीडिया का प्रयोग करते समय उन पर ध्यान रखना चाहिए। जिससे विद्यार्थी अपने व्यावहारिक रूप में हो रहे बदलावों को स्वय समझ सके एवं इनका निराकरण करने की ओर अग्रसर भी हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. प्रसाद, पिन्टू रंजन (2022) : उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर सोशल मीडिया का प्रभाव, शिक्षा संकाय, पी.एच.डी. स्तर हेतु, राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर.

२. शर्मा, प्राजंल मनीषा जैन (2022) : सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शलाा के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन, शिक्षा संकाय, प्रगति महाविद्यालय, चौबे कलोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़

३. जैन, अमिता (2019) : महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन, सहायक आचार्य शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं नागौर राजस्थान।

४. सिंह, अरविन्द कुमार (2019) : युवाओं में सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने कि क्या आदते है असिस्टेंट प्रोफेसर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बीबीबए केन्द्रिय विश्वविद्यालय, लखनऊ. www.shodh.net

५. श्रीवास्तव, मुकुल सुरेन्द्र कुमार (2017) : सोशल मीडिया और युवा विकास, सह आचार्य एंव अध्यक्ष पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)

६. www.genderiquality.com

७. www.wikipedia.com

८. www.desserationtopic.com

९. www.scribd.com